तृतीयः पाठः वीरः वीरेण पूज्यते

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) स्थानम्– अलक्षेन्द्रस्य ..... वीरभावो हि वीरता।।

[**अलक्षेन्द्रः** = सिकंदर, **सैन्यशिविरम्** = सेना का शिविर, **वन्दिनम्** = कैदी को, **अभिवादयते** = नमस्कार करता है, **साक्षेपम्** = ताना मारते हुए, **बन्धनगतः** = कैद किया हुआ, **पिञ्जरे** = पिंजरे में, **पराक्रमते** = पराक्रम करता है, **उभयत्र** = दोनों जगह।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृतखंड' के 'वीरः वीरेण पूज्यते' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– (स्थान–सिकंदर की सेना का शिविर। सिकंदर और आम्भीक बैठे हुए हैं। बंदी बनाए गए पुरुराज को आगे करके यवनों का सेनापति एक ओर से प्रवेश करता है।)

सेनापति– सम्राट की जय हो।

पुरुराज– यह भारतीय वीर (मैं) भी यवनराज का अभिवादन करता है।

सिकंदर– (ताना मारते हुए) अहा! बंधन में पड़े हुए भी तुम अपने को वीर मानते हो, पुरुराज।

पुरुराज– यवनराज! सिंह तो सिंह ही होता है, वन में रहे या पिंजरे में।

सिकंदर– किंतु पिंजरे में पड़ा हुआ सिंह कुछ भी पराक्रम नहीं करता है।

पुरुराज– पराक्रम करता है, यदि अवसर मिलता है और हे यवनराज ''बंधन हो अथवा मरण हो, जीत हो या हार हो, दोनों ही अवस्थाओं में तीर समान रहता है। वीरभाव को ही वीरता कहते हैं।''

(ख) अलक्षेन्द्रः– भारतम् ..... यत्र सन्ततिः॥

[**विरुद्धं** = विपरीत, **द्रुह्यन्ति** = द्रोह करते हैं, **हस्तक्षेपः** = दखल, **भारतीयः** = भारतवासी।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– सिकंदर– भारत एक राष्ट्र है। तुम्हारा यह कथन गलत है। यहाँ तो राजा और प्रजा आपस में द्रोह करते हैं।

पुरुराज– वह सब हमारा आंतरिक मामला है। उसमें बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप असहनीय है? यवनराज! अलग धर्म, अलग भाषा और अलग वेशभूषा के होते हुए भी हम सब भारतीय हैं। हमारा राष्ट्र विशाल है। जैसा कि—

''समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश स्थित है, वह भारतवर्ष है। जिसकी संतान भारतवासी हैं।''

(ग) अलक्षेन्द्रः–(सरोषम्) ..... युध्यस्व विगतज्वरः॥

[**सरोषम्** = क्रोध सहित, **दुर्विनीत** = दुष्ट, **न विस्मरामः** = नहीं भूलते हैं, **हतो** = मारे जाने पर, **प्राप्स्यसि** = प्राप्त करोगे, **जित्वा** = जीतकर, **भोक्ष्यसे** = भोगोगे, **निराशीर्निर्ममो**= बिना किसी इच्छा और मोह के।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– सिकंदर– (क्रोध सहित) दुष्ट! क्या तू नहीं जानता कि इस समय तू विश्व विजेता सिकंदर के सामने (खड़ा) है।

पुरुराज– जानता हूँ, किंतु सत्य तो सत्य ही है, यवनराज। हम भारतवासी गीता के संदेश को नहीं भूलते हैं।

सिकंदर– तो क्या है, तुम्हारी गीता का संदेश?

पुरुराज– सुनो ''(यदि युद्ध में) मारे गए, तो तुम स्वर्ग को प्राप्त करोगे अथवा जीत गए तो पृथ्वी (के राज्य) को भोगोगे। (इसलिए तुम) छारहित, मोहरहित और संतापरहित होकर युद्ध करो।''

(घ) सेनापतिः– सम्राट! ..... मैत्रीमहोत्सवं सम्पादयामः।

[**मोचय** = खोल दो, **इतं पर** = अब से, **सम्पादयामः** = करते हैं।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– सेनापति– सम्राट!

सिकंदर– वीर पुरुराज के बंधन खोल दो।

सेनापति– सम्राट की जैसी आज्ञा।

सिकंदर– (एक हाथ से पुरु का और दूसरे हाथ से आम्भीक का हाथ पकड़कर) वीर पुरुराज! मित्र आम्भीक! अब से हम बराबरी के मित्र हैं। इस समय मित्रता का महोत्सव मनाएँ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) अलक्षेन्द्रः कः आसीत्?

उ०– अलक्षेन्द्रः यनवराजः आसीत्।

(ख) पुरुराजः कः आसीत्?

उ०– पुरुराजः एकः भारतवीरः आसीत्।

(ग) पुरुराजः केन सह युद्धम् अकरोत्?

उ०– पुरुराजः अलक्षेन्द्रण सह युद्धम् अकरोत्।

(घ) अलक्षेन्द्रः पुरुराजेन सह कथं मैत्री इच्छति?

उ०– अलक्षेन्द्रः भारतीय नृपैः सह मैत्री कृत्वा भारतं विभाज्य जेतुम् इच्छति।

(ङ) गीतायाः कः सन्देशः?

उ०– ''युद्धे जयस्य पराजस्य वा चिन्तां त्यक्तवा युद्धं करणीयम् । युद्धे मरणेन स्वर्गप्राप्तिः जयेन च राज्यं प्राप्तिः भवति'' इति गीतायाः सन्देशः।

(च) वीरः केन पूज्यते?

उ०– वीरः वीरेण पूज्यते।

(छ) अलक्षेन्द्रः पुरुं किं प्रश्नम् अपृच्छत्?

उ०– कस्तावद् गीतायाः सन्देशः? इति अलक्षेन्द्रः पुरुं अपृच्छत्।

(ज) 'भारतम् एकं राष्ट्रम् इति' कस्य उक्तिः?

उ०– 'भारतम् एकं राष्ट्रम् इति अल्क्षेन्द्रस्य उक्तिः।

(झ) अलक्षेन्द्रः सेनापतिं किम् आदिशत्?

उ०– अलक्षेन्द्रः सेनापतिम् आदिशत् यत् ''वीरस्य पुरुराज बन्धनानि मोचय।''

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. **पिंजरे में बंद शेर कभी पराक्रम नहीं करता है।**
   अनुवाद– पञ्जरस्थः सिंहः न किमपि पराक्रमते।
2. **भारत एक राष्ट्र है।**
   अनुवाद– भारतः एकः राष्ट्रः अस्ति।
3. **तुम अपने को वीर कहते हो।**
   अनुवाद– त्वं स्वस्य वीरः कथयत्।
4. **राष्ट्र की रक्षा करना हमारा धर्म है।**
   अनुवाद– राष्ट्रस्य रक्षणम् अस्माकं धर्मः अस्ति।
5. **वीर पुरुष एक दूसरे का सम्मान करते हैं।**
   अनुवाद– वीरः पुरुषः एकः अन्यस्य सम्मानं कुर्वन्ति।
6. **भाषा व वेशभूषा अलग होने पर भी हम सब एक हैं।**
   अनुवाद– भाषाः वेशभूषाः च पृथक् अपि वयं सर्वे अभिन्नाः स्मः।
7. **यह वाचाल निश्चिती ही मारने योग्य है।**
   अनुवाद– इदं वाचालः निश्चितेव हन्ता योग्य अस्ति।

(स) व्याकरणात्मक

1. **'वि' उपसर्ग का प्रयोग करते हुए निम्न उदाहरण को देखकर पाँच नए शब्द बनाइए।**

भक्ति	–	वि + भक्ति	=	विभक्ति
शेष	–	वि + शेष	=	विशेष
मुक्त	–	वि + मुक्त	=	विमुक्त
षम	–	वि + षम	=	विषम
योग	–	वि + योग	=	वियोग
देश	–	वि + देश	=	विदेश

2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति और वचन लिखिए–

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
जना:	प्रथमा	बहुवचन
पञ्जरे	सप्तमी	एकवचन
बन्धनम्	द्वितीया	एकवचन
सर्वे	प्रथमा	बहुवचन
गीताया:	पञ्चमी/षष्ठी	एकवचन
सन्धिना	तृतीया	एकवचन
तव	षष्ठी	एकवचन

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।